



12078CH03

तृतीयः पाठः

## बालकौतुकम्

प्रस्तुत पाठ करुण रस के अनुपम चित्तेरे महाकवि भवभूति विरचित “उत्तररामचरितम्” नामक प्रसिद्ध नाटक के चतुर्थ अंक से संकलित किया गया है। राजा राम द्वारा निर्वासिता भगवती सीता के जुड़वाँ पुत्रों लव एवं कुश का महर्षि वाल्मीकि के द्वारा पालन-पोषण किया गया, उन्हें शस्त्रों एवं शास्त्रों की शिक्षा दी गयी तथा स्वरचित रामायण के सस्वर गान का अभ्यास कराया गया। महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में अतिथि रूप में पधारे राजर्षि जनक, कौसल्या एवं अरुन्धती खेलते हुए बालकों के बीच एक बालक में राम एवं सीता की छाया देखते हैं। वे उन्हें बुलाकर गोद में बिठाकर वात्सल्य की वर्षा करते हैं। इतने में ही चन्द्रकेतु द्वारा रक्षित राजा राम का अश्वमेधीय अश्व आश्रम में प्रवेश करता है। नगरीय अश्व को देखकर आश्रम के बालकों में कौतूहल उत्पन्न होता है। वे उसे देखने के लिए लव को भी बुला लाते हैं। लव घोड़े को देखते ही जान जाते हैं कि यह अश्वमेधीय घोड़ा है। रक्षकों की घोषणा सुनकर बालक लव घोड़े को आश्रम में ले जाकर बाँधने का आदेश देते हैं। इसका अत्यन्त मार्मिक चित्रण इस पाठ में हुआ है।

(नेपथ्ये कलकलः। सर्वे आकर्णयन्ति)

- जनकः : अये, शिष्टानध्याय इत्यस्खलितं खेलतां बटूनां कोलाहलः।  
कौसल्या : सुलभसौख्यमिदानीं बालत्वं भवति। अहो, एतेषां मध्ये क एष रामभद्रस्य मुग्धललितैरङ्गैर्दारकोऽस्माकं लोचने शीतलयति?  
अरुन्धती : कुवलयदलस्निग्धश्यामः शिखण्डकमण्डनो  
वटुपरिषदं पुण्यश्रीकः श्रियैव सभाजयन् ।  
पुनरपि शिशुर्भूतो वत्सः स मे रघुनन्दनो  
झटिति कुरुते दृष्टः कोऽयं दृशोरमृताञ्जनम् ॥1॥
- जनकः : (चिरं निर्वर्ण्य ) भोः किमप्येतत्।  
महिम्नामेतस्मिन् विनयशिशिरो मौग्ध्यमसृणो  
विदग्धैर्निर्ग्राह्यो न पुनरविदग्धैरतिशयः ।

मनो मे संमोहस्थिरमपि हरत्येष बलवान्  
अयोधातुं यद्वत्परिलघुरयस्कान्तशकलः ॥

- लवः : (प्रविश्य, स्वगतम्) अविज्ञातवयः क्रमौचित्यात् पूज्यानपि सतः  
कथमभिवादयिष्ये? (विचिन्त्य) अयं पुनरविरुद्धप्रकार इति  
वृद्धेभ्यः श्रूयते। (सविनयमुपसृत्य) एष वो लवस्य शिरसा  
प्रणामपर्यायः।
- अरुन्धतीजनकौ : कल्याणिन्! आयुष्मान् भूयाः।
- कौसल्या : जात! चिरं जीव।
- अरुन्धती : एहि वत्स! (लवमुत्सङ्गे गृहीत्वा आत्मगतम्) दिष्ट्या न केवल-  
मुत्सङ्गश्चिरान्मनोरथोऽपि मे पूरितः।
- कौसल्या : जात! इतोऽपि तावदेहि। (उत्सङ्गे गृहीत्वा) अहो, न केवलं  
मांसलोज्ज्वलेन देहबन्धेन, कलहंसघोष- घर्घरानुनादिना स्वरेण  
च रामभद्रमनुसरति। जात! पश्यामि ते मुखपुण्डरीकम्। (चिबुक-  
मुन्नमय्य, निरूप्य, सवाष्पाकृतम्) राजर्षे! किं न पश्यसि? निपुणं  
निरूप्यमाणो वत्साया मे वध्वा मुखचन्द्रेणापि संवदत्येव।
- जनकः : पश्यामि, सखि! पश्यामि। (निरूप्य)  
वत्सायाश्च रघूद्वहस्य च शिशावस्मिन्नभिव्यज्यते,  
संवृत्तिः प्रतिबिम्बतेव निखिला सैवाकृतिः सा द्युतिः ।  
सा वाणी विनयः स एव सहजः पुण्यानुभावोऽप्यसौ  
हा हा देवि किमुत्पथैर्मम मनः पारिप्लवं धावति ॥
- कौसल्या : जात! अस्ति ते माता? स्मरसि वा तातम्?
- लवः : नहि।
- कौसल्या : ततः कस्य त्वम्?
- लवः : भगवतः सुगृहीतनामधेयस्य वाल्मीकेः।
- कौसल्या : अयि जात! कथयितव्यं कथय।

- लवः : एतावदेव जानामि।  
(प्रविश्य सम्भ्रान्ताः)
- बटवः : कुमार! कुमार! अश्वोऽश्व इति कोऽपि भूतविशेषो जन-  
पदेष्वनुश्रूयते, सोऽयमधुनाऽस्माभिः स्वयं प्रत्यक्षीकृतः।
- लवः : 'अश्वोऽश्व' इति नाम पशुसमाम्नाये सांग्रामिके च पठ्यते, तद्  
ब्रूत-कीदृशः?
- बटवः : अये, श्रूयताम्-  
पश्चात्पुच्छं वहति विपुलं तच्च धूनोत्यजस्रम्  
दीर्घग्रीवः स भवति, खुरास्तस्य चत्वार एव ।  
शष्पाण्यत्ति, प्रकिरति शकृत्पिण्डकानाम्प्रमात्रान्  
किं व्याख्यानैर्ब्रजति स पुनर्दूरमेह्येहि यामः ॥  
(इत्यजिने हस्तयोश्चाकर्षन्ति)
- लवः : (सकौतुकोपरोधविनयम्।) आर्याः! पश्यत। एभिर्नीतोऽस्मि। (इति  
त्वरितं परिक्रामति।)
- अरुन्धतीजनकौ : महत्कौतुकं वत्सस्य।
- कौसल्या : अरण्यगर्भरूपालापैर्युयं तोषिता वयं च। भगवति! जानामि तं  
पश्यन्ती वञ्चितेव। तस्मादितोऽन्यतो भूत्वा प्रेक्षामहे तावत्  
पलायमानं दीर्घायुषम्।
- अरुन्धती : अतिजवेन दूरमतिक्रान्तः स चपलः कथं दृश्यते? (प्रविश्य)
- बटवः : पश्यतु कुमारस्तावदाश्चर्यम्।
- लवः : दृष्टमवगतं च। नूनमाश्वमेधिकोऽयमश्वः।
- बटवः : कथं ज्ञायते?
- लवः : ननु मूर्खाः! पठितमेव हि युष्माभिरपि तत्काण्डम्। किं न पश्यथ?  
प्रत्येकं शतसंख्याः कवचिनो दण्डिनो निषङ्गिणश्च रक्षितारः।  
यदि च विप्रत्ययस्तत्पृच्छत।

बटवः : भो भोः! किंप्रयोजनोऽयमश्वः परिवृतः पर्यटति?

लवः : (सस्पृहमात्मगतम्) 'अश्वमेध' इति नाम विश्वविजयिनां क्षत्रियाणा-  
मूर्जस्वलः सर्वक्षत्रपरिभावी महान् उत्कर्षनिकषः। (नेपथ्ये)

योऽयमश्वः पताकेयमथवा वीरघोषणा ।

सप्तलोकैकवीरस्य दशकण्ठकुलद्विषः ॥

लवः : (सगर्वम्)। अहो! संदीपनान्यक्षराणि।

बटवः : किमुच्यते? प्राज्ञः खलु कुमारः।

लवः : भो भोः! तत्किमक्षत्रिया पृथिवी? यदेवमुद्घोष्यते? (नेपथ्ये)

रे, रे, महाराजं प्रति कः क्षत्रियः?

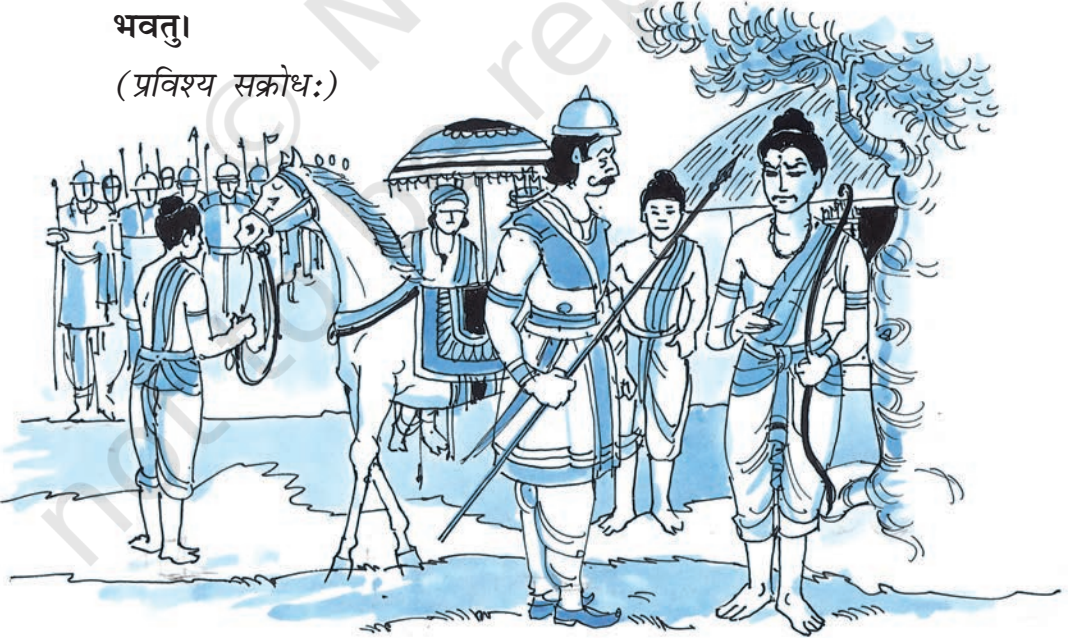
लवः : धिग् जाल्मान्।

यदि नो सन्ति सन्त्येव केयमद्य विभीषिका ।

किमुक्तैरेभिरधुना तां पताकां हरामि वः ॥

हे बटवः! परिवृत्य लोष्ठैरभिघ्नन्त उपनयतैनमश्वम्। एष रोहितानां मध्येचरो  
भवतु।

(प्रविश्य सक्रोधः)



- पुरुषः : धिक् चपल! किमुक्तवानसि? तीक्ष्णतरा ह्यायुधश्रेणयः शिशोरपि दृप्तां वाचं न सहन्ते। राजपुत्रश्चन्द्रकेतुर्दुर्दान्तः, सोऽप्यपूर्वारण्यदर्शनाक्षिप्तहृदयो न यावदायाति, तावत् त्वरितमनेन तरुगहनेनापसर्पत।
- बटवः : कुमार! कृतं कृतमश्वेन। तर्जयन्ति विस्फारितशरासनाः कुमार-मायुधीयश्रेणयः। दूरे चाश्रमपदम्। इतस्तदेहि। हरिणप्लुतैः पलायामहे।
- लवः : किं नाम विस्फुरन्ति शस्त्राणि?  
(इति धनुरारोपयति)

### शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

- शिष्टानध्यायः - शिष्टेषु (आप्तेषु) अनध्यायः शिष्टागमनप्रयुक्तोऽनध्यायः। बड़े लोगों के आने पर अवकाश।
- अस्खलितम् - अनियन्त्रितम्, बेरोकटोक।
- सुलभसौख्यम् - सुलभं सौख्यमस्मिन्। इसमें (बचपन में) सुख सुलभ होता है।
- मुग्धललितैः - मुग्धैः मनोहरैः ललितैः-सुकुमारैः। मनोहर व सुकुमार।
- कुवलयदलस्निग्ध-श्यामः - कुवलयम्-नीलकमलम् तस्य दलम्-पत्रम् तस्य इव स्निग्धः-मसृणः श्यामः-कृष्णवर्णः। नील कमल-दल के समान स्निग्ध (चिकना) तथा श्यामवर्ण।
- शिखण्डकमण्डनः - काकपक्षशोभितः। काकपक्षों (घुँघराले बालों) से अलङ्कृत।
- पुण्यश्रीकः - पुण्या-अलौकिकी श्री शोभा यस्य। अलौकिक शोभा- सम्पन्ना।
- दृशोरमृताञ्जनम् - दृशोः-नेत्रयोः, अमृताञ्जनम्-अमृतमयम् अञ्जनम्, आँखों में अमृतमय अञ्जन।
- विनयशिशिरः - विनयेन-विनम्रतया, शिशिरः-शीतलः। विनय से शीतल (महिम्नामतिशयः का विशेषण)।
- मौग्ध्यमसृणः - मौग्ध्येन-मधुरस्वभावतया, मसृणः-कोमलः सर्वभावुक- जनस्पृहणीयः। मधुर स्वभाव के कारण कोमल, स्पृहणीय।
- विदग्धैः - सूक्ष्ममतिभिः। विवेकियों के द्वारा।

|                          |   |   |
|--------------------------|---|---|
| सम्मोहस्थिरम्            | - | सम्मोहेन-शोकाघातेन, स्थिरम्-जडीभूतमिव, सीता निर्वासन के कारण शोकाघात से संज्ञाशून्य सा जड़।               |
| अयस्कान्तशकलः            | - | अयस्कान्तधातोः-चुम्बकस्य शकलः-अवयवः (खण्डः), चुम्बक का छोटा-सा टुकड़ा।                                    |
| अविज्ञातवयःक्रमौचित्यात् | - | अविज्ञातम् वयः क्रमौचित्यम्-अवस्था क्रम (आयु में छोटे बड़े का क्रम) का ज्ञान न होने से।                   |
| प्रणामपर्यायः            | - | यथाक्रमं प्रणामपरंपरा। औचित्य क्रम के अनुसार प्रणाम।  |
| उत्सङ्गे                 | - | क्रोडे। गोद में।  |
| मांसलोज्ज्वलेन           | - | मांसलेन-परिपुष्टेन बलवता उज्ज्वलेन-प्रकाशयुक्तेन, तेजस्विना। बलिष्ठ और तेजस्वी।                           |
| कलहंसघोषघर्घरानुनादिना   | - | कलहंसस्य यो घोषः-शब्दः तस्य अनुनादिना-अनुकारिणा। मधुर कण्ठवाले हंस के स्वर का अनुकरण करने वाले (स्वर से)। |
| मुखपुण्डरीकम्            | - | मुखमेव पुण्डरीकम्-श्वेतकमलम्, मुखरूपी कमल।  |
| पुण्यानुभावः             | - | पुण्यश्चासौ अनुभावः = पवित्रः-प्रभावः, माहात्म्यम्, पुण्य प्रभाव। “अनुभावः प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये।”  |
| अभिव्यज्यते              | - | अभि + वि + अञ्च् धातु + लट् (कर्मवाच्य), प्रथम पुरुष एकवचन, अभिव्यक्त होता है।                            |
| उत्पथैः                  | - | उन्मार्गैः। उन्मार्गों से।  |
| पारिप्लवम्               | - | चञ्चलम्।  |
| पशुसमाप्नाये             | - | पशुवर्गवर्णनपरे शास्त्रे, पशुशास्त्र में।   |
| सांग्रामिके              | - | सांग्राम वर्णनपरे शास्त्रे, सांग्रामशास्त्र में।  |
| धुनोति                   | - | धूञ् + लट् + प्रथम पुरुष एकवचन (स्वादिगण, श्नुविकरण), हिलाता रहता है।                                     |
| अजस्रम्                  | - | निरन्तरम्, लगातार।  |
| दीर्घग्रीवः              | - | दीर्घा ग्रीवा यस्य सः, जिसकी गर्दन लम्बी है।  |
| प्रकिरति                 | - | प्र + कृ + लट् + प्रथम पुरुष एकवचन (तुदादि, श विकरण), बिखेरता है। त्यागता है।                             |
| शकृत्                    | - | पुरीषम्। मल।  |

|                               |  |
|-------------------------------|--|
| आम्रमात्रान्                  | - आम्रफलतुल्यान्। आम के फलों जैसा।   |
| सकौतुकोपरोधविनयम्             | - कौतुकन, उपरोधेन, विनयेन च सहितम्, कौतूहल, आग्रह और विनय के साथ।  |
| अरण्यगर्भरूपालापैः            | - अरण्यगर्भाणां-वननिवासिनां (बालकानां) रूपैः- शरीरसौष्टवैः, आलापैः-वार्ताभिः। वनवासी बालकों के शरीर सौन्दर्य और बातचीत से। |
| पलायमानम्                     | - परा + अय् + लट् - शानच् आदेश (धातु) "उपसर्गस्यायतो" परा के र् को ल् आदेश द्वितीया एकवचन, दौड़ते हुए को।                  |
| दीर्घायुषम्                   | - दीर्घम् आयुः यस्य सः दीर्घायुः, तम्। चिरायु को अश्वमेध यज्ञ सम्बन्धी।  |
| निषङ्गिण                      | - निषङ्गाः सन्ति येषाम् ते निषङ्गिणः। निषङ्ग + इनि, (पुं) प्रथमा विभक्ति बहुवचन। तरकसधारी।                                 |
| विप्रत्ययः                    | - सन्देह, वि + प्रति + इण् धातु + अच् प्रत्यय।   |
| ऊर्जस्वलः                     | - ऊर्जोऽस्यास्तीति ऊर्जस्वलः, ऊर्जस् + वलच्। शक्तिशाली।  |
| सर्वक्षत्रपरिभावी             | - समस्त (शत्रु) राजाओं को पराजित करने वाली।  |
| उत्कर्षनिकषः                  | - उत्कर्षस्य निकथः, उत्कर्ष की कसौटी।  |
| सप्तलोकैकवीरस्य               | - सप्तलोकेषु एकवीरस्य, सातों लोकों में एकमात्र वीर का।   |
| दशकण्ठकुलद्विषः               | - दशकण्ठस्य कुलं द्वेषि इति दशकण्ठकुलद्विट्-तस्य। रावण के कुल के द्वेषी।   |
| सन्दीपनान्यक्षराणि            | - सन्दीपनानि + अक्षराणि। ये अक्षर (कथन) बड़े क्रोधोत्पादक हैं।   |
| लोष्ठैः                       | - ढेलों से।  |
| अभिघ्नन्तः                    | - अभि + हन् + लट् (शतृ), (पुं) प्रथमा विभक्ति बहुवचन, मारते हुए।   |
| रोहितानाम्                    | - मृगों के।  |
| अपूर्वारण्यदर्शनाक्षिप्तहृदयः | - अपूर्वारण्यस्य दर्शनेन आक्षिप्तं हृदयं यस्य सः, बहुव्रीहि समास। अपूर्व वन की शोभा देखने में संलग्न मन वाले।              |
| अपसर्पत                       | - अप + सर्प् + लोट् + मध्यम पुरुष बहुवचन। भाग जाओ।   |

|                  |   |   |
|------------------|---|---|
| विस्फारितशरासनाः | - | विस्फारितानि शरासनानि यैस्ते। बहुव्रीहि समास। धनुषों को ताने हुए।                                 |
| हरिणप्लुतैः      | - | हरिणानां प्लुतैरिव प्लुतैः। हरिणों की भाँति कूदते हुए।  |
| पलायामहे         | - | भाग जाँँ। परा + अय् धातु + लट् + उत्तम पुरुष बहुवचन “उपसर्गस्यायतो” से परा के र् को ल्, भाग चलें। |
| विस्फुरन्ति      | - | वि + स्फुर् + लट् + प्रथम पुरुष बहुवचन, चमक रहे हैं।  |
| आरोपयति          | - | (धनुष) चढ़ाता है।   |

### अभ्यास

#### 1. संस्कृतेन उत्तरं दीयताम् ।

- (क) ‘उत्तररामचरितम्’ इति नाटकस्य रचयिता कः?
- (ख) नेपथ्ये कोलाहलं श्रुत्वा जनकः किं कथयति?
- (ग) लवः रामभद्रं कथमनुसरति?
- (घ) बटवः अश्वं कथं वर्णयन्ति?
- (ङ) लवः कथं जानाति यत् अयम् आश्वमेधिकः अश्वः?
- (च) राजपुरुषस्य तीक्ष्णतरा आयुधश्रेणयः किं न सहन्ते?

#### 2. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत ।

- (क) अश्वमेध इति नाम क्षत्रियाणाम् महान् उत्कर्षनिकषः।
- (ख) हे बटवः! लोष्टैः अभिघ्नन्तः उपनयत एनम् अश्वम्।
- (ग) रामभद्रस्य एष दारकः अस्माकं लोचने शीतलयति।
- (घ) उत्पथैः मम मनः पारिप्लवं धावति।
- (ङ) अतिजवेन दूरमतिक्रान्तः स चपलः दृश्यते।
- (च) विस्फारितशरासनाः आयुधीयश्रेणयः कुमारं तर्जयन्ति।
- (छ) निपुणं निरूप्यमाणः लवः मुखचन्द्रेण सीतया संवदत्येव।



3. हिन्दीभाषया सप्रसङ्गव्याख्यां कुरुत ।

- (क) सर्वक्षत्रपरिभावी महान् उत्कर्षनिकषः।  
 (ख) किं व्याख्यानैर्व्रजति स पुनर्दूरमेह्येहि यामः।  
 (ग) सुलभसौख्यमिदानीं बालत्वं भवति।  
 (घ) झटिति कुरुते दृष्टः कोऽयं दृशोरमृताञ्जनम्?

4. अधोलिखितानि कथनानि कः कं प्रति कथयति ।

कः कं प्रति

- (क) अस्ति ते माता? स्मरसि वा तातम्? .....
- (ख) दिष्ट्या न केवलमुत्सङ्गः मनोरथोऽपि मे पूरितः। .....
- (ग) वत्सायाश्च रघूद्वहस्य च शिशावस्मिन्नभिव्यज्यते। .....
- (घ) सोऽयमधुनाऽस्माभिः स्वयं प्रत्यक्षीकृतः। .....
- (ङ) इतोऽन्यतो भूत्वा प्रेक्षामहे तावत्पलायमानं दीर्घायुषम्। .....
- (च) धिक् चपल! किमुक्तवानसि। .....

5. अधोलिखितवाक्यानां रिक्तस्थानानि निर्देशानुसारं पूरयत ।

- (क) क एष ..... रामभद्रस्य मुग्धललितैरङ्गैर्दारकोऽस्माकं लोचने .....  
 (क्रियापदेन)
- (ख) एष ..... मे सम्मोहनस्थिरमपि मनः हरति। (कर्तृपदेन)
- (ग) .....! इतोऽपि तावदेहि! (सम्बोधनेन)
- (घ) 'अश्वोऽश्व' ..... नाम पशुसमाम्नाये सांग्रामिके च पठ्यते। (अव्ययेन)
- (ङ) युष्माभिरपि तत्काण्डं ..... एव हि। (कृदन्तपदेन)
- (च) एष वो लवस्य ..... प्रणामपर्यायः (करणपदेन)

6. अधः समस्तपदानां विग्रहाः दत्ताः। उदाहरणमनुसृत्य समस्तपदानि रचयत, समासनामापि च लिखत ।

उदाहरणम्- पशूनां समाम्नायः, तस्मिन् पशुसामाम्नाये-षष्ठी तत्पुरुषः

- (क) विनयेन शिशिरः .....
- (ख) अयस्कान्तस्य शकलः .....
- (ग) दीर्घा ग्रीवा यस्य सः .....
- (घ) मुखम् एव पुण्डरीकम् .....
- (ङ) पुण्यः चासौ अनुभावः .....
- (च) न स्वलितम् .....

7. अधोलिखितपारिभाषिकशब्दानां समुचितार्थेन मेलनं कुरुत ।

- |                       |                     |
|-----------------------|---------------------|
| (क) नेपथ्ये           | (क) प्रकटरूप में    |
| (ख) आत्मगतम्          | (ख) देखकर           |
| (ग) प्रकाशम्          | (ग) पर्दे के पीछे   |
| (घ) निरूप्य           | (घ) अपने मन में     |
| (ङ) उत्सङ्गे गृहीत्वा | (ङ) प्रवेश करके     |
| (च) प्रविश्य          | (च) अपने मन में     |
| (छ) सगर्वम्           | (छ) गोद में बिठा कर |
| (ज) स्वगतम्           | (ज) गर्व के साथ     |

8. पाठमाश्रित्य हिन्दीभाषया लवस्य चारित्रिकवैशिष्ट्यं लिखत ।

9. अधोलिखितेषु श्लोकेषु छन्दोनिर्देशः क्रियताम्-

- (क) महिम्नामेतस्मिन् विनयशिशिरो मौग्ध्यमसृणो।  
 (ख) वत्सायाश्च रघूद्वहस्य च शिशावमिस्मन्नभिव्यज्यते।  
 (ग) पश्चात्पुच्छं वहति विपुलं तच्च धुनोत्यजस्रम्।

10. पाठमाश्रित्य उत्प्रेक्षालङ्कारस्य उपमालङ्कारस्य च उदाहरणं लिखत ।

## योग्यताविस्तारः

(क) भवभूतिः संस्कृतसाहित्यस्य प्रमुखो महाकविरासीत्।

“कविर्वाक्पतिराजश्रीभवभूत्यादिसेवितः।

जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणस्तुतिवन्दिताम्॥” इति कल्हणरचितराजतरङ्गिणीस्थश्लोकेन परिज्ञायते यदयम् अष्टमशताब्द्यां वर्तमानस्य कान्यकुब्जेश्वरस्य यशोवर्मणः समसामयिक आसीत्।

अनेन महाकविना त्रीणि नाटकानि रचितानि-

मालतीमाधवम्, महावीरचरितम् उत्तररामचरितं च।

उत्तररामचरितं भवभूतेः सर्वोत्कृष्टा रचनास्तीति विद्वत्समुदाये इयमुक्तिः प्रसिद्धा वर्तते

“उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।”

अस्य नाटकस्य कथावस्तु रामायणाधारितमस्ति। अत्र श्रीरामस्य राज्याभिषेकानन्तरमुत्तरं चरितं वर्णितम्, पूर्वचरितन्तु भवभूतिविरचिते महावीरचरिते प्रतिपादितम्। अत एव उत्तरं रामस्य चरितं यस्मिन् तत् उत्तररामचरितम्। अथवा उत्तरम् = उत्कृष्टं रामस्य चरितं यस्मिन् तत् उत्तररामचरितम् इति नाटकस्य नामकरणं समीचीनं वर्तते। सीतापरित्यागेनात्र रामस्योत्कृष्टराज्यधर्मपालनव्रतत्वं सूच्यते।

यद्यपि भवभूतिः करुणरसस्याभिव्यक्तये सविशेषं प्रशस्यते, परन्तु प्रस्तुते नाट्यांशे वात्सल्यस्य भावः मर्मस्पृशं प्रकटितः। तथैव हास्यरसस्यापि रुचिरा अभिव्यक्तिरत्र सञ्जाता।

(ख) अश्वमेधः - अश्वमेधयज्ञः प्राचीनकाले राज्यविस्ताराय राष्ट्र-समृद्धये च करणीयः यज्ञः आसीत्। अस्मिन् यज्ञे राज्ञां बलस्य पराक्रमस्य च परीक्षा भवति स्म। यज्ञकर्ता नृपः स्वराष्ट्रियप्रतीकमश्वं च सैन्यबलैः सह भूमण्डल-भ्रमणाय प्रेषयति स्म। यो नृपः स्वराज्ये समागतमश्वं निर्बाधं गन्तुं प्रादिशत्, स यज्ञकर्त्रे राज्ञे करदेयतां स्वीकरोति स्म। यः तमश्वमरुणत् स आश्वमेधिक-नृपस्याधीनतां नाङ्गीकरोति स्म। तदा उभयोर्बलयोर्मध्ये युद्धं भवति स्म तत्रैव च नृपाणां पराक्रमः परीक्ष्यते स्म। शतपथब्राह्मणे राष्ट्रार्थे प्रयुक्तम्-

‘राष्ट्रं वै अश्वः’ इति।

(ग) ‘बालकौतुकम्’ इतिपाठस्य साभिनयं नाट्यप्रयोगं कुरुत।

(घ) गुरुकुलपरम्परायां बालकानां कृते गुरुन् प्रति अभिवादनस्य कीदृशः शिष्टाचारः अत्र चित्रितः इति निरूप्यताम्। तथैव गुरवः कथम् आशीर्वचांसि अयच्छन् इत्यपि ज्ञेयम्।